कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक कार्यषाला प्रारम्भ

पंतनगर। 13 मई, 2011। विष्वविद्यालय के पशुचिकित्सा महाविद्यालय के रतन सिंह सभागार में आज कृषि विज्ञान केन्द्रों के जोन–4 की वार्षिक बैठक का शुभारम्भ हुआ। इस दो–दिवसीय बैठक के मुख्य अतिथि डा. ए.के. मेहता, उपमहानिदेषक (कृषि प्रसार) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर), नई दिल्ली थे। इस अवसर पर डा. ए.के सिंह, जोनल डायरेक्टर, कृषि विज्ञान केन्द्र, जोन–4; डा. पी.सी.मेहता, निदेषक, केन्द्रीय शीत जल मात्स्यिकी शोध संस्थान, नैनीताल; डा. कान्ति प्रसाद, निदेषक प्रसार, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, फैजाबाद; डा. नाहर सिंह, निदेषक प्रसार कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद; एवं डा. ओ.पी. सिंह, निदेषक प्रसार, सरदार बल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, मेरठ भी मंचासीन थे।

मुख्य अतिथि डा. मेहता ने वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके) द्वारा चौबिसों घण्टे अपनी सेवायें देने के पष्चात भी किसानों की समस्यायें बनी हुई है। उन्होंने कहा कि केवीके द्वारा अकेले इन समस्याओं का समाधान करना सम्भव नहीं है। इसके लिए स्वयं सेवी संगठनों एवं निजी तथा सार्वजनिक संस्थानों की मदद ली जानी आवष्यक होगी। उन्होंने चिन्ता जताते हुए कहा कि तापमान बढ़ने के साथ ही भू–जल स्तर निरन्तर गिर रहा है जिसके कारण फसल उत्पादन ही नहीं घट रहा बल्कि मवेषियों के लिए चारे की कमी होती जा रही है। डा. मेहता ने कहा कि केवीके अपने को विष्वविद्यालय से भिन्न न समझें क्योंकि वे स्वयं किसी विष्वविद्यालय से कम नहीं होते। उन्होंने केवीके से सहयोग की अपेक्षा करते हुए उन्हें सभी आवष्यक सुविधायें मुहैय्या कराने का आष्वासन दिया।

इस अवसर पर डा. ए.के. सिंह ने केवीके जोन–4 के समक्ष उपस्थित विभिन्न चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बारहवीं योजना में 13 केवीके को जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित कार्यों से जोड़ा जायेगा जिसमें से दो उत्तराखण्ड और 11 उत्तर प्रदेष से होंगे। उन्होनें कहा कि केवीके से की जाने वाली आम अपेक्षायें हाइब्रिड मक्के पर किये जाने वाला कार्य, उनके आकड़े तैयार करना; नील गाय प्रभावित क्षेत्रों में समस्या समाधान तथा पूरे क्षेत्र में कृषि मषीनरी का प्रचार–प्रसार आदि है। उन्होंने बताया कि उत्तराखण्ड का चमोली सबसे दूरवर्ती जिला है फिर भी वहां जोन के अन्तर्गत आने वाले अन्य जिलों की अपेक्षा जीरोटिलेज मषीन की संख्या (लगभग 500) अधिक है। उन्होंने अन्य जगहों पर भी ऐसी मषीनरी का प्रचार–प्रसार तथा परामर्ष की आवष्यकता बताते हुए इसे केवीके द्वारा बेहतरीन ढंग से करने की बात कही। डा. सिंह ने केवीके को अद्यतन बनाकर किसानों को सेवायें मुहैय्या किये जाने की सलाह दी।

डा. पी.सी. मेहता ने उच्च पर्वतीय क्षेत्र में लोगों के कठिन जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि पहाड़ में रोजगार के साधन सीमित है और वहां पर मत्स्य पालन रोजगार का एक सषक्त साधन बन सकता है जिससे वहां से पलायन भी कम हो सकता है। उन्होंने बताया कि केवीके के माध्यम से उनका संस्थान मत्स्य पालन का कार्य समूचे क्षेत्र में सुचारू रूप से कर सकता है। डा. नाहर सिंह, निदेषक प्रसार, नैनी, इलाहाबाद ने कृषि समस्याओं पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि आजादी के इतने वर्ष बाद भी हमारे यहां परम्परागत रूप से खेती की जा रही है। उन्होंने बीज प्रतिस्थापन दर दुगनी करना और प्रत्येक द्वार पर उच्च बीज पहुंचाना आवष्यक बताया। डा. ओ.पी. सिंह ने कहा कि यह बात सत्य है कि केवीके को काम देने के साथ–साथ सुविधायें भी मुहैय्या कराना भी आवष्यक है। उन्होंने कहा कि यह भी इन केन्द्रों के वैज्ञानिकों पर ही निर्भर है कि वे तकनीक को प्रयोगषाला से खेत तक किस तरह से पहुंचाते है। डा. कान्ति प्रसाद ने कहा कि हरित क्रांति के दौर से आज तक का लेखा–जोखा देखा जाय तो, फसलोत्पादन में वृद्धि तो हुई है लेकिन उसी अनुपात में किसानों की आय में वृद्धि नहीं हो पायी। हमें यह भी देखना होगा कि भरपूर उत्पादन के साथ ही किसानों की आय में कैसे वृद्धि हो।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में उपस्थित अतिथियों एवं वैज्ञानिकों का स्वागत पंतनगर विष्वविद्यालय के प्रसार षिक्षा निदेषक डा. वाई.पी.एस. डबास ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन संयुक्त निदेषक, प्रसार षिक्षा, डा. टी. पी. सिंह ने प्रस्तुत किया।

चित्र सं0 1: कृषि विज्ञान केन्द्रों के जोन–4 की वार्षिक कार्यषाला में मंचासीन मुख्य अतिथि एवं अन्य वैज्ञानिक।